'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ४६ | वाराणसी, शनिवार, १८ अप्रैल, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

श्री घनश्यामदासजी बिड़ला के साथ — पिलानी (राज०) ३०-३-'५९

ग्रामशक्ति और विश्वशक्ति के विकास से ही नये धर्म की स्थापना होगी

प्रश्न : आप किस तरह का समाज स्थापित करना चाहते हैं ? नव-निर्माण के बारे में आपकी कुछ कल्पना है या भगवान जैसा चाहेगा, वैसा होगा, ऐसा आप मानते हैं।

विनोबा : हम नये समाज की स्थापना करना चाहते हैं। पुराने मूल्य अब नहीं चल सकते। इसलिए नये धर्म की स्थापना भी करनी होगी। हमने बहुत बार कहा है कि अभी तक धर्म की स्थापना नहीं हुई है। अब तक केवल उस दिशा में प्रयत्न ही हो रहा है। मकान बनानेवाला राइट एङ्गिल पर मकान बनाता है। लेकिन उससे पूर्व राइट एङ्गिल छोड़कर मकान बनाने की कोशिश हुई होगी। लोग उस कोशिश में असफल भी हुए होंगे, फिर' राइट एङ्गिल पर मकान बनाने का सिद्धान्त स्थिर हुआ होगा। उसी प्रकार अभी तक धर्म का कोई भी सिद्धान्त नहीं बना है। सत्य भी ठीक है, अहिंसा भी ठीक है। याने इसमें भी 'भी' आ गया—याने धर्म में भी अपवाद करना पड़ता है। राजनीति में अपवाद, व्यापार में अपवाद, आर्मी में अपवाद और शादी के काम में भी अपवाद। सब जगह अपवाद ही अपवाद। सत्य में ५० तरह के अपवाद करने का अर्थ ही यह है कि अभी धर्म की स्थापना ही नहीं हुई है।

वेदान्त, विज्ञान और विश्वास की शक्ति

हम विज्ञान और आत्मज्ञान को जोड़नेवाला पूर्ण दर्शन चाहते हैं। इस दर्शन के अनुरूप जीवन-व्यवहार करना हर इन्सान के लिए लाजमी होगा। हर बात में अपवाद करने से सारे समाज की व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाती है। अभी वर्तमान में जितने काल्पनिक धर्म हैं। उन सबका अन्त (वेदान्त) करके एक नया समाज खड़ा करना होगा। जिसका आधार सत्य, प्रेम और करुणा होगा। सभी में सहयोग होगा। वैज्ञानिक दृष्टि होगी और होगा एक-दूसरे के प्रति विश्वास।

'वेदान्तो विज्ञानं विश्वासश्चेति शक्तयस्तिस्रः।
यासां स्थैर्यैः शान्तिः समृद्धिर्भविष्यतो जगति।'

दुनिया में वेदान्त, विज्ञान औ विश्वास के स्थिर होने से ही शान्ति तथा समृद्धि होगी। जहाँ शान्ति है, वहाँ समृद्धि न हो और जहाँ समृद्धि है, वहाँ शान्ति न हो, तो दोनों बेकार हैं।

आज-कल राजनीति में एक-दूसरे पर अविश्वास रखना ही एक गुण माना जाता है, परन्तु विज्ञान-युग में इस प्रकार एक-दूसरे के प्रति सशंकित रहना खतरनाक माना जायगा। अब तो राजनीति का मूलाधार ही विश्वास होगा। जीवन का बाह्य रूप विज्ञान से बनेगा और आन्तरिक रूप विश्वास से।

यन्त्र का मर्यादित उपयोग

विज्ञान का अर्थ यन्त्र नहीं है। विज्ञान के जरिये यन्त्रों का आविष्कार किया जाता है। यन्त्र तीन प्रकार के होते हैं। (१) समय-साधक यन्त्र। इस यन्त्र से उत्पादन नहीं होता। किन्तु समय का बचाव होता है और मनुष्य के काम में गति आती है। मोटर, रेल, एयरोप्लेन आदि समय-साधक यन्त्रों की कोटि के हैं। हम ऐसे यन्त्रों को चाहते हैं। (२) घातक यन्त्र। युद्ध आदि अवसरों पर जिन यन्त्रों से संहार होता है, वैसे घातक यन्त्रों के हम विरोधी हैं। (३) उत्पादक यन्त्र। उत्पादक यन्त्र कभी पूरक रूप में काम आते हैं, तो कभी मारक रूप में। मनुष्य की शक्ति को बेकार करनेवाले यन्त्र मारक होते हैं। किन्तु जिन यन्त्रों से संपत्ति तथा उत्पादन वृद्धि होने के साथ ही साथ मनुष्य-शक्ति बेकार नहीं होती, उन्हें हम पूरक यन्त्र कहते हैं। हम मारक यन्त्र नहीं चाहते। पूरक यन्त्र चाहते हैं। एक समय में एक जगह जो यन्त्र मारक होते हैं, वे ही दूसरे समय में दूसरी जगह पूरक सिद्ध हो जाते हैं। कुछ यन्त्र इस देश में पूरक होते हैं, तो कुछ यन्त्र दूसरे देश में पूरक। सभी देशों में सभी यन्त्र पूरक भी नहीं होते और मारक भी नहीं होते। अमेरिका में एक मनुष्य के पीछे औसत दस-बारह एकड़ जमीन है और हिन्दुस्तान में औसत पौन एकड़ जमीन है। दोनों देशों की परिस्थितियाँ भिन्न-भिन्न हैं। इसलिए दोनों देशों में एक ही प्रकार के यन्त्र की योजना करना ठीक नहीं हो सकता। परिस्थिति के अनुसार ही कभी पुराने यन्त्रों को छोड़कर नये यन्त्रों का निर्माण करना होगा और कभी पुराने ही यन्त्रों को बनाये रखना होगा। मनुष्यों की सुख-सुविधा के लिए मनुष्य

अपने ही विवेक से यन्त्रों का उपयोग करे, यही यन्त्र के सम्बन्ध में हमारी नीति रहेगी।

खेती धर्म है

खेती एक धर्म है और एक धन्धा भी। हम चाहते हैं कि खेती के धन्धे में कम-से-कम लोग हों। लेकिन अधिक-से-अधिक लोग खेती के धर्म से सम्बन्धित रहें। जो देश खेती के धर्म से वञ्चित रहेगा, वह नष्ट हो जायगा। खेती के उद्योग में चन्द लोग रहें, और दूसरे उद्योगों में ज्यादा-से-ज्यादा लोग रहें। लेकिन खेती के साथ हर व्यक्ति का सम्बन्ध आना ही चाहिए। कुदरत के सम्पर्क से मानव का विकास होता है। अगर शहर बढ़ते चले जायँगे, तो हमारा सम्बन्ध कुदरत से छूट जायगा। फिर बीमारियाँ, मनोविकार और भेद बढ़ेंगे। देश क्षीण होगा। इसलिए हमारे विचार से हरएक को खेती में २ घंटा काम करना चाहिए। साधारणतया आदमी ६ या ८ घंटे अन्य उद्योगों में काम करता है। वहाँ अगर डेढ़-दो घंटा खेती का काम भी करेगा, तो स्वभावतः ही ऐसी समाज-रचना हो जायगी, जिससे जीवन-विकास के लिए सभी को समान अवसर मिलेगा।

अनुभवयुक्त तालीम

तालीम अनुभवी मनुष्यों के हाथ में होनी चाहिए। जो अपने जीवन के अनुभवों से बच्चों को लाभान्वित कर सकें, वे ही सच्चे शिक्षक होते हैं। हमने बहुत बार कहा भी है कि हर मनुष्य को अमुक अवधि के बाद निवृत्त हो जाना चाहिए। ४५ या ५० साल की उम्र के बाद हर मनुष्य को शिक्षक बनना चाहिए। आज की स्थिति को देखते हुए हम चाहते हैं कि हर मनुष्य शिक्षित बने। प्रारंभिक २० वर्षों तक ब्रह्मचर्य का पालन करे। फिर २५ साल तक गृहस्थाश्रमी जीवन बिताये। उसकी एक सम्यक् योजना होनी चाहिए। उसके बाद मनुष्य को निवृ हो जाना चाहिए। आज का आदमी जिन्दगीभर अपने कामों से चिपका रहता है। निवृत्ति की बात ही नहीं सोचता। इसीलिए तो इधर जो लड़का परीक्षा में पास होता है, वह शिक्षक बन बैठता है। राजनीति का 'क, ख' भी नहीं जानता है और राजनीति का शिक्षण देता है! जिसने कभी इतिहास का निर्माण नहीं किया, वह इतिहास का शिक्षक हो गया! व्यापारिक क्षेत्र के अनुभव के बिना ही वह व्यापार का अध्यापक कैसे बन सकता है? अनुभवहीन लोगों के हाथ में तालीम होने से ही राष्ट्र का नुक्सान होता है। जवानों को तालीम देने के लिए अनुभवी शिक्षक चाहिए। इसीलिए हमने कई बार कहा है कि पं० नेहरू को राजनीति का अध्यापक बनना चाहिए। घनश्यामदास बिड़ला को 'कामर्स' का अध्यापक बनना चाहिए। नेपोलियन को युद्ध-कला का शिक्षक बनना चाहिए। सही शिक्षकों के होने से राष्ट्र पर सेना का भार कम होगा। क्योंकि शिक्षकों को हम शान्ति-सैनिक मानते हैं। शिक्षकों को ऐसा ही काम करना चाहिए, जिससे दुनिया के झगड़े मिटें।

मन से ऊपर उठना ही सत्याग्रह है

विज्ञान-युग में मनुष्य को मन से ऊपर उठना चाहिए। अब मानसिक स्तर पर चिंतन करते रहने से समस्याओं का हल नहीं निकलेगा। इसलिए हमें उत्तरोत्तर सौम्य, सौम्यतर, सौम्यतम चिंतन करना होगा। युद्ध में एक शस्त्र का उपयोग किया जाता है और यदि उसका कुछ भी परिणाम नहीं आता है, तो उससे तीव्रतर शस्त्र का उपयोग करना होता है। उसका भी परिणाम नहीं आता है, तो तीव्रतम शस्त्र का इस्तेमाल करना होता है। यह हिंसक प्रक्रिया है। अहिंसक प्रक्रिया में तीव्र, तीव्रतर, तीव्रतम चिंतन नहीं होता। सौम्य, सौम्यतर सौम्यतम चिंतन होता है। ताकि सामनेवाले के मन में क्षोभ न हो। जहाँ सामनेवाले के मन में क्षोभ उत्पन्न हो जाता है, वहाँ उसके चित्त का दरवाजा बन्द हो जाता है। जहाँ हमारे विचार सुनने के लिए सामनेवाले का मन तैयार नहीं होता, वहाँ असली सत्याग्रह नहीं होता।

उपासना गुण-विकास के लिए

धर्म की उपासना एकांगी नहीं होनी चाहिए। मनुष्य की श्रद्धा बढ़े, बल बढ़े, और आत्मावलम्बी बने। ऐसी उपासना चाहिए। उपासना गुण-विकास की दृष्टि से करनी चाहिए। हर क्रिया से गुण-विकास हो रहा है, ऐसा दीखना चाहिए। किसी मनुष्य को अपने में सत्य की कमी महसूस होती हो, तो उसे सत्येश्वर की पूजा करनी चाहिए। जिस मनुष्य में क्रोध आदि विकार हों, उसे करुणा रूपी परमेश्वर की उपासना करनी चाहिए। हम में जिन गुणों की कमी हो, उनके विकास के लिए ही हमें प्रयत्नशील होना चाहिए। आज परमेश्वर को हम अलग-अलग स्वरूप में देखने की कोशिश करते हैं। तथा हम यह मानते हैं कि वह किसी कोने में बैठा दुनिया का व्यवहार चला रहा है। यह एकदम गलत खयाल है। वह सर्वव्यापी है। हमारा अत्यन्त परिशुद्ध रूप उसके साथ घुल-मिल गया है। इसलिए परमेश्वर की उपासना में अन्तः-शोधन होना चाहिए एवं तदनुसार संकेत, शब्द और सृष्टि में उसका प्रतिबिम्ब देखना चाहिए।

राष्ट्रीय सीमाएँ टूटें

हम चाहते हैं कि राष्ट्र-राष्ट्र की सीमाएँ न रहें। विज्ञान-युग में इधर ग्राम और उधर विश्व रहेगा। दोनों को जोड़नेवाली जो बीच की कड़ियाँ हैं, वे दिन पर दिन कमजोर होंगी और शासन अव्यक्त होगा। हमारी संस्कृति फूलों की माला जैसी है। माला में हर फूल खिला हुआ रहता है और अन्दर एक धागा पिरोया हुआ रहता है। फूल सूखने के बाद ही धागा दीख सकता हो तो फूल सूखेगा ही क्यों? हर फूल विकसित होगा। वैसे ही एक-एक ग्राम विकसित होगा। एक शेष सारे ग्राम एक सूत्र में पिरोये हुए होंगे। ऊपर-ऊपर से नैतिक सत्ता रहेगी। नीचे नैतिक और भौतिक दोनों सत्ताएँ होंगी। ऊपर के स्थान में जो विश्व-केन्द्र बनेगा, उसमें सर्वोत्तम नीतिमान राग-द्वेष रहित स्थितप्रज्ञ पुरुष होंगे। वे जो सलाह देंगे, उसे मानना न मानना लोगों पर निर्भर करेगा। लेकिन राग-द्वेष रहित होने के कारण उनकी सलाह आज्ञा से कम न होगी।

हवा-पानी की तरह जमीन भी सभी की होनी चाहिए। जमीन पर किसी भी व्यक्ति या देश की मालकियत न हो। कम या बेसी जितनी भूमि है, वह सब हम बाँट लें। मनुष्य-संख्या बढ़ रही है और जमीन का रकबा कम है, तो हमें संयम रखना चाहिए। संयम आज जितना कठिन है, उतना कठिन आगे नहीं रहेगा। भोग के साधन बढ़ेंगे, किन्तु भोग-वासना कम होगी। विज्ञान-युग में उत्तरोत्तर संयम की साधना आसान होगी। इस तरह समाज का नव निर्माण होनेवाला है। हम मानते हैं कि अगर ईश्वर की मनसा इस काम में न होती, तो हम

लोगों को यह अहिंसा की प्रक्रिया न सूझती । हम जैसे लोगों को—जिनके पास किसी तरह की हिम्मत या कीमत नहीं—यह कल्पना सूझी है, इसलिए हम मानते हैं कि अब आगे धर्म-स्थापना होनेवाली है।

एकांगी विचार नहीं टिकेंगे

प्रश्नः—लोकशाही के कारण दिन ब दिन वृत्तियाँ बिगड़ती जा रही हैं। अच्छे मूल्य घट रहे हैं। आध्यात्म की कमी महसूस हो रही है। इससे आप को कैसा लगता है ?

विनोबाः—इसमें डरने की कोई बात नहीं है। विश्व में जागतिक युद्ध के कारण कुछ पुराने नैतिक विचार शिथिल हो गये हैं। इसलिए नहीं कि वे सर्वोत्तम थे, किन्तु इसलिए कि वे एकांगी थे। इसलिए स्थायी नैतिक मूल्य बनकर न रह सके।

धर्मशास्त्र तथा योगसूत्र में हमने माना है कि परिग्रह नहीं होना चाहिए। हम चोर को सजा देते, हैं, पर परिग्रह करनेवाले को कुछ नहीं कहते। चोर से चोरी छुड़वानी है, तो संग्रह करना बन्द करना होगा।

कम्युनिस्ट कहते हैं कि हम अपहरणकर्ताओं का अपहरण करते हैं। उसका उन्होंने एक शास्त्र ही बना लिया है, लेकिन उनसे भी आगे बढ़कर मैं कहा करता हूँ कि कंजूस चोरों के बाप हैं। इसलिए बाप को छोड़कर लड़के को सजा देने से काम नहीं होगा। उसके लिए तो दोनों को सम्यक् दृष्टि देनी होगी। उपनिषद् में राज्य का वर्णन करते समय लिखा गया है—'न मे स्तेनो जनपदे'—हमारे राज्य में चोर, कंजूस दोनों नहीं हैं। सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय, तो वे दोनों समान हैं। दोनों अपराधी हैं। लेकिन कानून की दृष्टि में संग्रह करनेवाले को दण्डनीय नहीं माना गया ! यह एकांगी विचार है। इसी तरह स्त्री के लिए पतिव्रत धर्म माना गया है। लेकिन पुरुष के लिए पत्नीव्रत धर्म नहीं है। भला-बुरा कैसा भी पति हो तो भी उसके साथ पत्नी को रहना ही पड़ेगा। इस तरह की एकांगी वृत्ति अब नहीं टिक सकती। इसलिए मैंने कहा कि पुराने मूल्य एकांगी होने के कारण न टिक सके और युद्ध के कारण उखड़ गये।

पुराने मूल्यों को उखाड़ने में बेकारी का हाथ रहा है और उससे भी ज्यादा तालीम का हाथ है। आज ऐसी तालीम दी जा रही है, जिससे विद्यार्थी उच्छृङ्खल बनते हैं। स्वभावतः विद्यार्थी अनुशासनहीन नहीं होते। लखनऊ, कानपुर आदि बड़े-बड़े नगरों में सबसे ज्यादा विद्यार्थियों की उपस्थिति होने के कारण हमारी सभाएँ सबसे शान्त रहीं। इसका अर्थ ही है कि विद्यार्थी शान्त होते हैं। फिर परिस्थिति के कारण उच्छृङ्खल बनते हैं। मुझे तो इस बात का आश्चर्य होता है कि कालेज में जैसी विद्या पढ़ाई जाती है, वासनापूर्ण जीवन जीया जाता है, अनियन्त्रित सिनेमा दिखाये जाते हैं और अश्लील साहित्य पढ़ा जाता है। इसके बावजूद ये लड़के-लड़कियाँ मेरे पीछे चले आते हैं। लेकिन यह एक जीवन-दर्शन है, इसलिए निराशा का कोई कारण नहीं है।

◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

पडघरी (हालार) २३-११-'५८

गाँव की योजना गाँव में बनेगी, तब ग्राम-स्वराज्य आयेगा

कानून का लंगड़ापन

आप सभी जानते हैं कि गत ग्यारह वर्षों से हमारा देश स्वतन्त्र है। इस बीच काठियावाड़ में बहुत-से सुधार हो गये और उन्हें आप देख भी चुके हैं। इन सुधारों में कई लोगों को कुछ हानि उठानी पड़ी, तो कई लोगों को लाभ भी हुआ। समाज में जो कानून बनते हैं, वे एकांगी हुआ करते हैं। उसमें कितनों के साथ न्याय होता है, तो कितनों के साथ अन्याय भी। सारे देश के लिए जो कानून बनते हैं, उनसे कुछ को लाभ होना और कुछ को हानि होना स्वाभाविक ही है। वर्षा होती है तो कितने ही खेतों के लिए वह अच्छी होती है, तो कितनों को हानिकारक भी होती है। बाढ़ से नयी-नयी मिट्टी आने से लाभ होता है, तो वह कितने ही घरों को बहा भी ले जाती है। इसी तरह यह कानून भी जड़सृष्टि जैसा है। वह किसी को सुखी बनाता है, तो किसी को दुःखी भी। हर व्यक्ति की सुख-सुविधाओं का अलग-अलग विचार करने की वृत्ति कानून में नहीं होती।

मैंने सुना है कि सौराष्ट्र में जो सुधार हुए, उनसे जहाँ बहुतों को सुख हुआ, वहाँ बहुतों को दुःख भी। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं। कानून बनानेवाले के मनमें यह भावना नहीं रहती कि अमुक को सुख हो और अमुक को दुःख हो। फिर भी ऐसा हो जाता है। इसलिए दुःखों से बचने का क्या उपाय हो सकता है, यही खोज का विषय है। वर्षा लाभ-हानि दोनों पहुँचाती है, तो हमें चाहिए कि हम उस पर पूरे निर्भर न रहें। गाँव-गाँव में कुएँ खोदें और जमीन को जितने पानी की जरूरत हो, उतने की व्यवस्था खुद कर लें। वर्षा का पानी अधिक बरसे, तो उसकी निकासी की भी योजना कर लें। ऐसा करने पर वर्षा से नुकसान नहीं, लाभ ही होगा। इसी प्रकार कानून की हानि से बचने और उसके लाभ पाने की कोई युक्ति खोजनी चाहिए। मुझे ऐसी एक युक्ति मिल गयी है और वह है—ग्रामदान।

ग्रामदान द्वारा ग्राम-समाज अपने ढंग से आगे बढ़े और प्रत्येक गाँव एक स्वतंत्र आदर्श बन जाय। जिस गाँव में जैसी स्थिति हो, उसके अनुसार हर गाँववाले अपनी योजना बनायें और अपने गाँव का समाधान करें। वे ऐसा करेंगे, तभी बच पायेंगे। सभी गाँवों की योजना दिल्लीवाले करेंगे, तो आपको कुछ नफा, तो कुछ नुकसान दोनों भुगतना ही पड़ेगा। इसीलिए मैंने यह ग्रामदान का विचार निकाला है।

फिर भी बहुतों को इस ग्रामदान में भय लगता है। वे सोचने लगते हैं कि वैसे सरकार तो जमीन लेने की बात करती ही है, कम्युनिस्ट और सोशलिस्ट भी ऐसी ही बातें करते हैं, अब बाबा भी यही बात करने लगे। ये सभी एक साथ जुटकर हमें परेशान करने आये हैं। इसलिए इनसे डर

लगता है। लेकिन मैं सिर्फ अपने बारे में आपसे कहना चाहता हूँ कि दुनिया में ग्रामदान-आन्दोलन से बढ़कर गाँवों की सुरक्षितता की दूसरी योजना हो ही नहीं सकती। सरकारी कानूनों की हानि से बचाने और उससे लाभ दिलानेवाली इसके सिवाय दूसरी योजना हो ही नहीं सकती। आप सभी इसपर विचार कीजिये। अगर गाँवों में हमारा ही राज्य चलता है, तो ऊपरवालों को जो मदद देनी हो, वह तो देंगे ही, पर वे हमारे गाँवों में विघ्न नहीं ला सकेंगे। आज हमारे देश को स्वराज्य मिले ११ वर्ष हो गये, लेकिन क्या गाँवों को अब भी स्वराज्य मिल पाया है? यदि स्वराज्य का पूरा लाभ गाँव को नहीं मिला, तो उस स्वराज्य से क्या फरक पड़ा?

न्याय कहाँ हो?

अभी तक जो झगड़े चलते थे, वे दिल्ली पहुँचते और वहाँ भी न मिटने पर वे लन्दन प्रीवी कौंसिल में जाते थे। लेकिन स्वराज्य मिलने के बाद वे दिल्ली तक पहुँचकर वहीं रुक जाते हैं, लन्दन तक नहीं पहुँचते। इसलिए कहा जा सकता है कि हमें स्वराज्य मिला—राष्ट्र के झगड़े बाहर नहीं जाते। किन्तु यदि गाँव का झगड़ा गाँव से बाहर जाता हो, जैसा कि आज हो रहा है, तो यह स्वराज्य गाँव को मिला, यह नहीं कहा जा सकता। गाँव को इससे कुछ लाभ नहीं कहा जा सकता। ग्राम-स्वराज्य तभी कहा जायगा, जब गाँव के झगड़े गाँव में ही हल होंगे। गाँव को यह स्वराज्य पाना हो, तो कोई ऊपर से आकर इसे टपका नहीं देगा। स्वराज्य तो खुद की कमाई होती है, इसलिए उसे अपने पुरुषार्थ से प्राप्त करना पड़ता है। देश स्वतंत्र हो गया, तो उससे लाभ उठाकर गाँवों में भी स्वराज्य की स्थापना की जा सकती है। लेकिन यदि हम देश के स्वराज्य से लाभ न उठायें, तो कैसे चलेगा? जो पराधीनता अंग्रेजों के राज्य में थी, आज स्वराज्य के बाद भी वह कायम रही, तो फिर अंग्रेजों के जाने या न जाने से कोई फर्क पड़ा—यह नहीं कहा जा सकता।

टालस्टॉय ने एक कहानी लिखी है। किसी एक लड़के ने देखा कि पड़ोस के घर में कुछ लड़कियाँ एक साथ बैठकर रो रही हैं। उसने पता लगाया कि आखिर ये क्यों रो रही हैं? मालूम पड़ा कि अदालत ने इनके विरुद्ध कोई निर्णय किया था। उस लड़के ने उन लड़कियों के पिता से कहा कि 'आप तहसील के कोर्ट में अपील कीजिये।' पिता ने कहा: 'अगर वहाँ भी विरुद्ध निर्णय मिला तो?' 'फिर डिस्ट्रिक्ट कोर्ट में जाइये।' 'वहाँ भी अनुकूल फैसला न हुआ तो?' 'मास्को जाइये।' 'फिर मास्को में भी अनुकूल निर्णय न हो पाया तो?' 'फिर परमेश्वर के पास अपील कीजिये।' तब पिता ने कहा कि 'जब अन्तिम अपील परमेश्वर के पास ही करनी हो, तो पहली अपील ही उसके पास क्यों न की जाय?' वह इसका जवाब न दे सका। इसी तरह गाँव का झगड़ा गाँव में ही तय हो गया, ऐसा मानकर गाँव में दिये जाने वाले फैसले से ही समाधान मान लिया जाय, तो गाँव में स्वराज्य आ जायगा।

ग्राम-व्यवस्था

ग्रामदान में अमुक के पास अधिक से अधिक जमीन और अमुक के पास कुछ भी नहीं हो ऐसा नहीं हो सकता। सारी जमीन गाँव की मानी जायगी और आधा-आधा एकड़ हरएक को दी जायगी। फिर जितनों की ग्रामोद्योग दिया जा सकेगा, दिया जायगा। गाँव में कोई बेकार न रहेगा और अगर कोई बेकार रहा, तो उसके खिलाने की जिम्मेवारी ग्रामसभा पर रहेगी। जिनके पास पहले अधिक जमीन न रही हो, उन्हें दस वर्ष तक कुछ अधिक जमीन दी जायगी, जिससे वे आसानी से अपना गुजारा कर सकें, जैसा कि हमने राजा-महाराजाओं के लिए किया। गाँव की अपनी एक दूकान होगी और उसी की मार्फत बाहर का व्यवहार चलेगा। कोई खानगी दूकान न रहेगी। जमीन की मालकियत ग्रामसभा की होगी और गाँव की जमीन का छठा हिस्सा पहले भूमिहीनों को दिया जायगा। इससे अधिक भी दिया जा सकेगा, तो अच्छा है। लेकिन यदि वह न दिया जा सके, तो ग्रामोद्योग हरएक को मिलना चाहिए। गाँव के झगड़ों का निर्णय गाँव में ही होगा। इस तरह ग्राम-योजना की जाय, तो सरकार के कानून कुण्ठित हो जायँगे और गाँववालों के लिए गाँव के कानून ही चलेंगे। गाँव के सभी लोग मिलकर जो निर्णय करेंगे, वह पूरे गाँव को मान्य करना पड़ेगा। क्या हमें गाँव में शादी के लिए भी कभी सरकार से अनुमति लेनी पड़ती है? वर-वधू के माता-पिताओं की मंजूरी से विवाह हो जाय, तो सरकार उसके बीच पड़ ही नहीं सकती। इसी तरह यदि हम अपने न्याय आदि की व्यवस्था करें, तो सरकार उसमें इस प्रकार न पड़ेगी, जिससे गाँव को कोई तकलीफ हो। गाँव के सभी लोग मिलकर जो निर्णय करेंगे, सरकार को उसे मानना ही पड़ेगा। फिर हम लोग उसे कर देते हैं, तो वह मदद के लिए हमसे पूछेगी ही। इस तरह इसमें हमें सरकार की मदद मिलेगी और उससे हैरानी भी न होगी। इसकी एक मात्र युक्ति है—ग्रामदान!

इसीलिए मैं कहता हूँ कि 'ग्रामदान अभयदान है।' किन्तु यहाँ काठियावाड़ में यह भय खड़ा हो गया है कि ग्रामदान आयेगा, तो क्या हो जायगा? लेकिन भाइयो! आप सभी निर्भय रहें कि ग्रामदान ऊपर से लादा नहीं जायगा। विचार करके अगर ग्रामदान करें, तो उससे आपका ही लाभ होगा और आपकी ही कठिनाइयाँ दूर होंगी। फिर भी अगर आप सबको ग्रामदान की कल्पना से भय लगता हो, तो ऐसे ग्रामदान की मुझे तनिक भी जरूरत नहीं। मैं तो यही चाहता हूँ कि आप सभी सुखी हों। आप लोगों को दुखी बनाने के लिए मेरी यह यात्रा नहीं चलती। अगर आप लोग ग्रामदान के बिना भी सुखी होते हों और ग्रामदान से आपको भय लगता हो, तो उसे कतई न करें। फिर भी विश्वास रखें कि ग्रामदान से आपको कुछ भी नुकसान न होगा। उससे ग्रामराज्य ही होगा और उस ग्रामराज्य से 'रामराज्य' लाया जा सकेगा।

ग्रामराज्य ही रामराज्य

ग्रामराज्य जहाँ पहला कदम है, वहीं रामराज्य अन्तिम कदम। ग्रामराज्य में गाँव के झगड़े गाँव में ही मिट जायँगे, तो रामराज्य में वे होंगे ही नहीं। इसीलिए एक बार मैंने कहा था कि 'ग्रामराज्य' में पहले गर्व का 'ग' रहता है, जो बहुत ही गड़बड़ करता है। उसे हम हटा दें, उससे मुक्त हो जायँ, तो वह 'रामराज्य' बन जायगा। यह समझने की बात है कि ग्रामराज्य रामराज्य की साधना है। 'रामराज्य' का अर्थ यह नहीं कि कोई राम नाम का राजा था और दशरथ का पुत्र था। राम नाम तो हरएक के हृदय में है। जो नाम हृदय में रममाण हुआ है, रमण करता है, वही राम है। लेकिन आज वे सोये हुए हैं, अप्रकट हैं। जब वे जग जायँगे, प्रकट होंगे, तो रामराज्य हो जायगा। पहले ग्रामराज्य होगा और फिर उसमें से गर्व निकल जायगा, तकरार मिट जायगी, तो फिर रामराज्य आयेगा। एक बार रामराज्य आया,

तो वह कायम ही रहेगा। वह स्थिर होने के लिए ही आता है। अन्य राज्यों में तो एक का दूसरे पर शासन हुआ करता है। लेकिन इसमें एक का दूसरे पर शासन नहीं रहेगा। केवल प्रेम, करुणा और सहकार्य ही रहेगा।

यह सब सुनकर बहुत से लोग पूछते हैं कि 'आप ये सारी बातें कहते हैं, पर वे किस दिन होंगी ?' मैं कहता हूँ कि आप करेंगे, तब होंगी। बिना किये यह हो ही नहीं सकता। यह कोई ज्योतिष शास्त्र की बात नहीं कि शुक्र, गुरु अमुक दिन एक होंगे, तब यह काम होगा। जब करेंगे, तभी होगा और जितना समय बितायेंगे, उतनी ही देर लगेगी। अगर आप कल ग्रामस्वराज्य की स्थापना करें, तो कल होगी और आज ही रात में करना चाहें, तो अब भी हो सकती है। विचार समझने में जितना समय लगेगा, उतना लगेगा। लेकिन विचार समझने के बाद तो देर लग ही नहीं सकती। मान लीजिये, मेरे बिस्तर पर साँप पड़ा हो और मुझे उसका पता लग जाय, तो क्या मैं उस बिस्तर पर पड़ा रहूँगा ? बिस्तर छोड़ तत्काल उठ भागूँगा। भले ही बिस्तर मुलायम लगता हो, पर उससे छोड़कर चला ही जाऊँगा। इसी तरह अगर लोगों को स्पष्ट ध्यान में आ जाय कि मालकियत घातक चीज है, यह गाँववालों के हृदयों के टुकड़े करती है, तो यह दर्शन होने के साथ ही उस पर अमल होगा। किन्तु जब तक दर्शन न हो, तब तक विचार करते रहेंगे और जब तक विचार समझ में न आयेगा, उसपर अमल नहीं किया जा सकेगा। जब विचार समझ में आ जायँ, तो फिर मुझे कुछ कहना ही नहीं है।

बड़े लोग यह बातें शान्ति से सुनें और उसपर अमल न करें, तो बच्चे इसपर चर्चा करेंगे कि वे बाबा के विचारों पर कब अमल करेंगे। अगर उन्हें यह विचार समझ में आ जाय। फिर तो वे नाच उठेंगे, क्योंकि ग्रामदान में किसी बच्चे के एक-ही-माता-पिता न रहेंगे और न किसी माँ के दो-चार बच्चे। गाँव के सभी बच्चे उनके अपने बच्चे बनेंगे और सभी माताएँ उनकी अपनी माताएँ बनेंगी। भूख लगने पर वे किसी भी घर में जाकर कहेंगे कि 'माँ मुझे भूख लगी है' और हर माता उन्हें उतने ही प्रेम से खिलायेगी। कोई भी माँ बीमार होने पर उधर से गुजरते हुए बच्चे से कहेगी कि 'अरे! मेरी तबीयत खराब है, मेरा इतना काम कर दे' तो बच्चा खुशी से कर देगा।

धरती का स्वर्गः ग्रामदान

लोग कहते हैं, बात तो अच्छी है, पर क्या यह संभव भी है ? मैं कहता हूँ कि क्यों नहीं ? अगर आप करना चाहें, तो क्या किसी को कुत्ते ने काटा है कि आपको आकर रोकेगा ? सरकार, पुलिस या कोर्ट कौन रोकने आयेगा ? जब आपको यह बात अच्छी लगती है, मीठी लगती है, तो फिर आप उसे क्यों न करें ? यह सारा बड़ा ही मधुर दर्शन है। लेकिन पुराणों में आनेवाले स्वर्ग जैसा दर्शन नहीं है। पुराणों में स्वर्ग का काफी वर्णन आता है, पर उस स्वर्ग की सीढ़ी कौन बनाता है ? अमृतलाल पढ़ियार ने 'स्वर्गकी सीढ़ी' नामक एक पुस्तक लिखी है, लेकिन यह सीढ़ी कोई नहीं बनाता। कम्युनिस्ट कहते हैं कि अपने लोगों में से कितनों को ही मार डालें, तो स्वर्ग स्थापित किया जा सकता है, जब कि पौराणिक कहते हैं कि जब हम मरें, तभी स्वर्ग में पहुँच सकते हैं। ऐसा मारने और मरनेवाला स्वर्ग हमें नहीं चाहिए। स्वर्ग तो ऐसा चाहिए, जिसमें न तो किसी को मरना पड़े और न किसी को मारना ही। वास्तव में उसी का नाम स्वर्ग है और वह यहीं जमीन पर उतारना है। इसी जन्म में और इसी देह में उसे पाना है। भाई कह रहे थे कि स्वर्ग में पालकी में बैठने को मिलता है, तो बहुत ही आनन्द मिलता है। लेकिन मैं कहता हूँ कि जहाँ कुछ पालकी उठानेवाले लोग हों और कुछ उसमें बैठनेवाले, तो वहाँ ऊँच-नीचता रहेगी ही। जहाँ कोई इन्द्र, कोई उपेन्द्र, कोई राजा तो कोई अधिराजा हों, ऐसा स्वर्ग किसी काम का नहीं है। हमें तो इसी दुनिया का स्वर्ग चाहिए, जहाँ समान अधिकार हो, समान प्रेम हो, कोई ऊँच-नीच न हो, सभी भाई-भाई जैसे रहें। और जो खुद मरे या किसी को मारे बिना प्राप्त हो। हम ऐसा ही स्वर्ग लाना चाहते हैं और उसका मार्ग है—ग्रामदान !

◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

चिड़ावा (राज०) २९-३-'५९

सर्व-सेवा-संघ जैसी पक्ष-मुक्त संस्थाएँ देश के लिए आवश्यक

सर्वोदय-पात्र का कार्यक्रम राष्ट्रीय स्तर पर चलना चाहिए, यही हमारी कामना है। यह कामना नयी नहीं है। पुराने समय में बिहार में ऐसा कार्यक्रम चलता रहा। पर वह अखिल भारतीय कार्यक्रम न हो सका। और न उसके पीछे एक बुनियादी योजना ही थी। ऐसे ही पुराने जमाने में गाय, संन्यासी तथा अन्यान्य लोगों के लिए भी कुछ-न-कुछ खाना देने का रिवाज था। वह रिवाज आज नहीं रहा। लेकिन फिर भी देहातों में उसके प्रति एक भावना मौजूद है। उसी चीज को हम एक नये और व्यापक ढंग से खड़ा करना चाहते हैं। उससे शान्ति के काम को मदद मिलेगी। शान्ति के लिए सम्मति के तौर पर लोग घर-घर में सर्वोदय-पात्र रखें। वह सर्वोदय-पात्र शान्ति-सैनिक के लिए होगा, यह गौण बात है। शान्ति-सैनिक के लिए तो सम्पत्तिदान है। लोग आज संम्पत्तिदान देते हैं और आगे भी दें, ऐसी योजना की जा सकती है। लेकिन सर्वोदय-पात्र के अन्दर डाले जानेवाले एक मुट्ठी अनाज की कीमत एक नैतिक कीमत है। हम साध्य-साधन-शुद्धि चाहते हैं। सामाजिक समस्याओं का हल नैतिक साधनों से हो, इसके लिए साधन-शुद्धि अपेक्षित है। यही सर्वोदय का मूलभूत विचार है। इसी विचार के लिए हमें लोक-सम्मति चाहिए। सर्वोदय-पात्र उसी लोक-सम्मति का प्रतीक है। करुणा का राज्य व्यापक करने की दिशा में यह ऐच्छिक कर है।

पानी बरसता है। बूँद-बूँद करके सभी जगह गिरता है। लेकिन वह सभी जगह इकट्ठा तो नहीं होता। इसलिए सर्वोदय-पात्र का कुल विनियोग भी आपके ही गाँव में हो, ऐसा

नहीं सोचना चाहिए। उसका उपयोग तो अहिंसा और करुणा का राज्य स्थापित करने के लिए है। इसलिए जहाँ भी जरूरत होगी, सर्वोदय-पात्र का सोचकर उपयोग किया जा सकता है। उस काम में अपने गाँव और अपने क्षेत्र का आग्रह नहीं होना चाहिए। इसका आयोजन कौन करेगा? अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ। यह संघ क्या है? और किस तरह से चलता है? इस सम्बन्ध में भी आपको कुछ जानकारी कर लेनी चाहिए।

पक्ष-मुक्त लोगों का संघ

सर्व-सेवा-संघ पक्षमुक्त लोगों का संघ है। इस संघ के द्वारा जो भी काम होता है, वह सर्वसम्मति से होता है। सर्वसम्मति से काम करने की दिशा में यह एक नया प्रयत्न है। इसमें जगह-जगह अनेक प्रकार की रुकावटें आना भी संभव है। पर जैसे-जैसे हम उसके कारणों पर विचार करते जायेंगे, वैसे-वैसे नया पथ प्रशस्त होगा। इसलिए सर्वसम्मति से काम करना आवश्यक है।

जो सद्विचार हमारे मन में आया, उस पर हमें फौरन अमल करने नहीं लग जाना चाहिए, ऐसी बात नहीं है। चिरकाल तक भी उस काम को करते रह सकते हैं। यह एक विचार की बात है।

महाभारत का प्रसंग है। एक पिता ने अपने लड़के से कहा कि जाओ, अपनी माँ का वध कर आओ। अमुक समय में यह काम हो जाना चाहिए। आज्ञा देकर पिता चला गया। पुत्र भी अपना काम करने गया। वापस लौटा, तो पिता ने पूछा कि क्या तुमने अपनी माँ का वध कर लिया? उसने कहा 'कत्ल करने का निश्चय कर लिया है, पर अभी कत्ल किया नहीं है। मैं सोच रहा हूँ कि उसे मारना ही है, तो फिर दयापूर्वक तरीके से मारूँ। उसी तरीके को मैं खोज रहा हूँ।' पुत्र का उत्तर सुनकर पिता खुश हुआ। वह पिता एक ऋषि था। उसने अपने लड़के को 'चिरकालिक' नाम से अभिहित किया। और कहा कि अच्छे काम में देरी भी हो जाय, तो नुकसान नहीं है।

सर्व-सेवा-संघ चिरकालिक है। उससे अच्छा काम नहीं होगा, तो बुरा काम भी नहीं होगा। बुरा काम न करना भी एक बहुत बड़ा पुरुषार्थ है। अच्छे काम में देरी हो जाय, तो भी कोई हर्ज नहीं है और परिपक्व विचार के बिना काम नहीं करना चाहिए। कानून में क्या होता है? दस गुनहगार छूट जायँ, तब भी हर्ज नहीं, लेकिन एक भी बेगुनाह को सजा नहीं मिलनी चाहिए। इसी तरह सर्व-सेवा-संघ ने भी बुरा काम न करने की योजना बनायी है। वह पक्षमुक्त है, इसलिए बुरा काम नहीं कर सकता। इसीलिए सभी लोग उसके व्यापक बनने की कामना करते हैं। सभी पक्षवाले चाहते हैं कि हमारा पक्ष खूब फले-फैले। पर उन्हें सर्व-सेवा-संघ जैसा आशीर्वाद कहाँ मिलता है? राजनैतिक पक्षों की बड़ी विचित्र स्थिति है। वे छाछ भी फूँक-फूँककर पीते हैं। कोई भी व्यक्ति कहीं अच्छा काम करता है, तो उन्हें भय लगता है। किसीके तपस्या करने से इन्द्र को हमेशा अपना आसन डोल जाने का खतरा महसूस होता है। वही हाल वर्तमान में राजनैतिक पक्षवालों का है। इन्द्र तपस्वियों के मार्ग में रुकावट पैदा करता है। वैसे ही ये लोग गतिरोध उत्पन्न करते हैं। पर सर्व-सेवा-संघ को किसी बात का भय नहीं है। पिछले सात-आठ वर्षों से सर्व-सेवा-संघ की गति-प्रगति को देखकर सभी को विश्वास पैदा हुआ है। येलवाल परिषद् में इस संघ ने सभी पक्षवालों को एकत्र किया—यह एक विशेष बात हुई। आज ऐसी दूसरी कोई जमात नहीं है, जो सभी पक्षवालों को एक प्लेटफार्म पर इकट्ठा कर सके। सर्व-सेवा-संघ के प्रयत्नों से ही नेहरू से लेकर नंबूदरीपाद तक सब 'नकार' ने मिलकर येलवाल परिषद् में 'हंकार' किया। यह कोई छोटी बात नहीं है। नेहरू को भी यह प्रसंग देखकर बहुत आश्चर्य हुआ। उसकी अभिव्यक्ति उन्होंने अपनी जापान-यात्रा में की।

येलवाल की फलश्रुति

बहुत लोगों ने मुझे पूछा कि येलवाल परिषद् की फलश्रुति क्या है? वहाँ प्रसाद नहीं बाँटा गया, नारियल नहीं दिया गया, इसलिए लोगों के लिए फलश्रुति जानना बाकी ही रह गया। लोग पूछते हैं कि 'येलवाल में सभी पक्षोंवाले मिले, तो क्या वे अब काम में लग जायेंगे? निष्क्रिय होकर एक-दूसरे पर अविश्वास रखनेवालों से क्या काम होगा?' वे क्या करते हैं, यही लोग पूछते हैं, परन्तु हम क्या करते हैं, यह कोई नहीं देखता। येलवाल में जो नेता इकट्ठे हुए, वे इंजिन न थे और न डब्बे ही थे। वे थे लाल झंडी दिखानेवाले लोग, जिन्होंने वहाँ पहुँचकर हरी झंडी दिखाई और संकेत कर दिया कि चलाओ गाड़ी, कोई खतरा नहीं है।

विरोध को खतम करने की मेरी अपनी कोई ताकत नहीं थी, पर उस काम से विरोध खतम हो गया। इसे आन्तरिक सत्याग्रह का उत्तम उदाहरण कहा जा सकता है। हमसे बार-बार कहा जाता है कि क्या कानून से काम नहीं हो सकता? हम कहते हैं कि बारह आना काम लोकशक्ति से हुआ और चार आना काम कानून से हुआ, तो हम रोयेंगे नहीं। लेकिन अगर सोलहों आना काम लोकशक्ति से हुआ, तो हम नाचेंगे। कानून के हम विरोधी नहीं हैं। कानून को बनानेवाले भी आखिर कौन हैं? जनता। कानून से काम होगा और आपसे नहीं होगा, ऐसा कहने का अर्थ है कि जो काम आपके नौकर कर सकते हैं, वह काम आप मालिक होकर भी नहीं कर सकते। हम किसी प्रकार के कानून का प्रेशर लाना नहीं चाहते हैं।

नागपुर-कांग्रेस ने प्रस्ताव पास किया। वह प्रस्ताव भी एक छोटी-सी चीज है। ग्रामदान उससे बड़ी चीज है। फिर भी अभी तक लोक उस प्रस्ताव पर अड़े हुए हैं। क्योंकि पहले जो सीलिंग बननेवाला था, उसमें छोटे-छोटे काश्तकारों का नाम था। फिर बाद में छोटे काश्तकारों के बदले में भूमिहीनों को सरप्लस जमीन दी जायगी, ऐसा तय हुआ। यह सब क्या तमाशा है? हमने कांग्रेस से इस सम्बन्ध में कोई माँग नहीं की थी और न ही हम कानून के पीछे ही पड़े थे। फिर भी यह हो रहा है। इसका मतलब ही है कि यह एक सूक्ष्म सत्याग्रह चल रहा है। क्षयरोगी के लिए सूक्ष्म दवा ही होती है। बड़ी फजर में 'आल्ट्रा वायलट रेज' सूर्य की किरणों में क्षयरोगी को बैठाते हैं। उस समय की सूर्य-किरणों में अनेक सूक्ष्म धातु जलते हैं।

होमियोपैथी में मर्दन करते-करते दवा को बारीक बनाते हैं। बारीक करते-करते दवा अनन्तपुटी बनती है, उसका महत्त्व है। तो जो धातु जल रही है, वह अत्यन्त सूक्ष्म रूप है, चमड़ी को सूर्य नारायण का स्पर्श कराती है और उसीसे लाभ होता है। इसलिए सूर्य की किरणों में क्षयरोगी को नंगा सुलाते हैं। यह सूक्ष्म प्रक्रिया अधिक परिणाम करती है।

आठ साल से भूदान-ग्रामदान का काम चल रहा है। दीवारों के साथ हम टकरा रहे थे। मालिकी मिटाना क्या आसान काम है? फिर भी हम प्रेमपूर्वक मालिकी मिटाने की बात समझाते रहे। याने यह काम एक सूक्ष्म सत्याग्रह का काम हो गया। सभी विरोध खतम हो गये। अविरोधी काम हो गया। 'कुर्यात् सदा मंगलम्'। शादी के लिए सबका आशीर्वाद मिलता है, वैसे ही मालकियत मिटाने के काम को भी सबका आशीर्वाद मिल गया। यही येलवाल परिषद् की फलश्रुति है।

नागपुर-कांग्रेस के प्रस्ताव पर यह आक्षेप उठाया गया कि इससे कम्युनिज्म की दिशा में बढ़ा जा रहा है। उस पर नेहरूजी ने जवाब दिया कि इससे कम्युनिज्म आता है, तो आने दो। मोरारजी ने इसी बात का दूसरे ढंग से उत्तर दिया कि अगर हम ऐसे प्रस्ताव कर आगे नहीं बढ़ेंगे तो कम्युनिज्म आयेगा। एक ही आक्षेप के दो जवाब! एक कहता है कि यह करेंगे, तो कम्युनिज्म आयेगा और दूसरा कहता है यह नहीं करेंगे तो कम्युनिज्म आयेगा। नम्बूदरीपाद ने कहा कि अगर यह चलेगा, तो कम्युनिज्म के लिए आल्टरनेटिव हो सकेगा। याने इसमें 'अगर' तो है ही। और हम मानते हैं कि ईश्वर चाहता है, इसलिए यह चलेगा। मैं यह कहना चाहता हूँ कि हमारे इसी दृष्टिकोण से सर्व-सेवा-संघ के लिए अविरोधी भावना उत्पन्न हुई है।

केवल अच्छा काम

आज एक भाई से बात करते समय हमने कहा कि सर्व-सेवा-संघ को राजनैतिक पक्षवालों के लिए हमने वेटिंग रूम नहीं बनाया है। यह तो व्यासपीठ है, मंदिर है। इसमें बाटा का जूता, ग्रामोद्योगी चमड़े का जूता आदि की तरह पार्टीवालों के जूतों को प्रवेश नहीं मिलेगा।

सर्व-सेवा-संघ की कुंडली में लिखा है कि या तो यह कुछ भी काम नहीं करेगा या अच्छा ही काम करेगा। इससे कोई गलत काम नहीं हो सकता है। दूसरे पक्षोंवाले जहाँ यह कहते हैं कि आप चुनाव में हमें चुनकर भेजें, तो हम आपको स्वर्ग में ले जायेंगे, वहाँ सर्व-सेवा-संघ यह कहेगा कि आपका स्वर्ग तो आपही के हाथों में है। इसलिए आप अपने हाथों से काम कीजिये और धरती पर स्वर्ग को उतारिये। परमेश्वर कैसे काम करवाता है? जो व्यक्ति काम करना चाहता है, उसे ही परमेश्वर की मदद मिलती है। लेकिन जो व्यक्ति निष्क्रिय होकर बैठा रहता है, उसे परमेश्वर भी मदद नहीं देता। वैसे सर्व-सेवा-संघ काम करनेवालों को योग देगा। आपने यदि सर्व-सेवा-संघ को मुट्ठीभर अनाज हर रोज दिया, तो भी सर्व-सेवा-संघ काम आप ही से करवायेगा। उसकी कार्य-पद्धति सर्वसम्मतिवाली है।

धर्म की नयी पद्धति

सर्वोदय-पात्र का काम धर्म की एक नयी पद्धति है। इससे सारी स्थिति में परिवर्तन होनेवाला है। एक भाई ने रविशंकर महाराज से पूछा कि क्या सर्वोदय-पात्र का उपयोग अनाथों, गरीबों और दुःखियों के लिए होगा, तो उन्होंने जवाब दिया कि उनके दारिद्र्य को कायम रखकर उन्हें थोड़ी-थोड़ी मदद देने के लिए सर्वोदय-पात्र का उपयोग नहीं होगा। परन्तु इसका उपयोग तो दारिद्र्य को मिटाने के लिए ही होनेवाला है। युद्ध में सिपाही जख्मी होते जायँ और हम उनकी सेवा करते जायँ, तो उससे क्या फायदा है? असल में सिपाही जख्मी ही न हो, तभी सही काम हुआ—ऐसा कहा जायगा। लोग अनाथों को, दुःखियों को, पंगुओं को दान देते हैं, लेकिन लोग अनाथ न बनें, दुःखी न बनें, पंगु न बनें—इसकी कोशिश नहीं करते हैं। हमें दरिद्रों को मदद देने के बदले दारिद्र्य मिटाने की ही कोशिश करनी चाहिए। राहत देने के लिए पुरानी धर्म-व्यवस्था के अन्तर्गत सारी योजनाएँ बनायी जाती थीं, परन्तु अब नयी धर्म-व्यवस्था बनाते समय राहत से काम नहीं चलेगा। अब तो जड़-मूल से परिवर्तन लाना होगा। सर्वोदय-पात्र की बुनियाद में आपको यही दृष्टि मिलेगी। आज की राजनीति को कायम रखकर थोड़ी मदद करने के लिए ही यह सर्वोदय-पात्र नहीं है। नयी समाज-व्यवस्था और नूतन जीवन की अभिव्यंजना है यह!

शान्ति-सैनिकों की परख

शान्ति-सेना के बारे में भी कुछ कहना चाहता हूँ। जिन भाइयों ने अपना नाम शान्ति-सैनिक के लिए दिया है, उन्हें हमने शांति-सैनिक मान ही लिया है—ऐसा नहीं है। जिन्होंने नाम दिया, उन्होंने अपना प्रेम जाहिर किया है, परन्तु उन सबकी परख करने की जिम्मेवारी हमारी हो जाती है। इसलिए हम उनकी परख करेंगे। हम किसीको फेल करना नहीं चाहते हैं। लेकिन मानलो कि अगर किसीमें किसी प्रकार की योग्यता कम हुई, तो हम उन्हें दूसरे काम देंगे, परन्तु फेल करके वापस नहीं लौटायेंगे। कोई ढोंगी हों, दाम्भिक हों, तो वे नहीं टिक सकेंगे। कोई कच्चा मनुष्य शान्ति-सेना में आये, तो जैसी ग्रामोद्योग में कच्चे माल का पक्का माल बनाया जाता है, वैसे ही हम उसे पक्का बनायेंगे।

राजस्थान से त्रिविध अपेक्षाएँ

इतने दिनों में हम सम्पूर्ण राजस्थान तो नहीं देख पाये, पर जितना भी देखा है, उससे इतना विश्वास हो गया है कि इस प्रान्त के गाँव-गाँव तथा घर-घर में सर्वोदय-पात्र रखे जा सकते हैं। कोई क्षेत्र लेकर इसके लिए प्रयत्न करना चाहिए। यहाँ शान्ति-सैनिक भी बहुत हो सकते हैं, लेकिन उसके लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। यहाँ तालीम की बहुत कमी है। औसत दृष्टि से भी यहाँ के लोग अधिक अशिक्षित हैं। उसके कारणों के बारे में कुछ भी बताना अभी अप्रासंगिक होगा। फिर भी हाँ, यहाँ जो शान्ति-सैनिक बनेंगे, उनके लिए लम्बी तालीम देने का प्रबन्ध करना होगा।

इस प्रान्त में कुछ ग्रामदान भी मिले हैं। वे ग्रामदान आदिवासी इलाके के अन्तर्गत हैं। हम चाहते हैं कि वह पूरा इलाका ही ग्रामदान में प्राप्त होना चाहिए। ग्रामदान अभयदान है, इस बात की प्रतीति अगर हम वहाँ के लोगों को करा सकें, तो यह काम हो सकता है।

अमुक प्रकार से दान हो, तभी ग्रामदान कहा जाय,

अन्यथा उसे ग्रामदान न कहा जाय—ऐसा भी हम लोगों को नहीं मान लेना चाहिए।

(१) जिन गाँवों के लोगों ने व्यक्तिगत मालकियत छोड़ दी, वे ग्रामदानी गाँव हैं।

(२) कुल जमीन का षष्ठांश भूमिहीनों को दे देना। प्रारंभिक कदम के तौर पर इतना ही हो जाय, तो काफी है। अभी तत्काल ही समान बँटवारा न हो सके तो भी कोई परवाह नहीं।

(३) गाँव की कुल-की-कुल जमीन गाँव की हो जाय, तब गाँव के रक्षण, पोषण और शिक्षण की व्यवस्था ग्रामसभा उठा ले।

इस प्रकार अगर इन तीन बातों में से एक-एक भी हो जाय तो काफी है। इसके लिए भी छोटे लोगों और बड़े लोगों को विश्वास दिलाना होगा। जिसके पास जो कुछ है, वह उसे छोड़ना नहीं चाहता। उसके लिए स्नेहपूर्वक उसका हृदय-परिवर्तन करने की कोशिश करनी होगी। सभी गाँव अपने पाँवों पर खड़े रहें, इस तरह की रचना अगर हम करेंगे तो मेरा खयाल है कि राजस्थान में ही नहीं, अपितु समस्त भारत में ग्रामदान मिल जायेंगे।

राजस्थान में राजनैतिक झगड़े हैं। एक ही पार्टी में भेद-प्रभेद हैं। फिर भी यहाँ की सरकार हमारे काम के अनुकूल है और हम लोगों के प्रति सहानुभूति रखती है। वह हमें मदद देने के लिए भी राजी है। किन्तु हमें उसकी मदद कम से कम लेनी है। हम लोक-शक्ति जगाना चाहते हैं, यही बात ध्यान में रखकर आगे बढ़ें!

◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

चुरू (राज०) २२-३-'५९

हमारा आन्दोलन दुनिया में शान्ति और करुणा की प्रतिष्ठा के लिए चल रहा है।

आप सब लोग जानते हैं कि हमारी यह पदयात्रा करीब आठ साल से चल रही है। तेलंगाना से इसका आरम्भ हुआ था। वहाँ से हम दिल्ली की ओर गये थे। उसके बाद उत्तर-प्रदेश और बिहार में २-२ साल बिताये। फिर बंगाल, उड़ीसा, दक्षिण के चारों प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात होकर हम राजस्थान में आये हैं। अब दस-पाँच दिन के अन्दर ही हमारी यह राजस्थान की यात्रा भी समाप्त हो रही है। यहाँ से हम पंजाब होते हुए कश्मीर जायेंगे। वहाँ से वापस लौटते समय हम दुबारा राजस्थान में आयें, ऐसी आशा की जा रही है। लेकिन हम नहीं जानते कि आगे का कार्यक्रम क्या है? परमेश्वर की तरफ से हमें कोई निश्चित कार्यक्रम प्राप्त नहीं हुआ है। हमारा सारा कार्यक्रम उसीकी मर्जी पर है। वह चाहे तो हमें आज ही अपने पास बुला सकता है। उसके द्वारा बुला लिये जाने पर हमें किसी प्रकार का असमाधान नहीं होगा, बल्कि अपना काम हम कर चुके, ऐसा ही हम मानेंगे। हमारी जीवन-यात्रा जितनी निश्चिन्तता से चल रही है, उतनी ही निश्चितता से हमारी यह भूदान-यात्रा भी चल रही है।

तुलना मत कीजिये

एक भाई ने हमको लिखा कि 'आपका काम निःसंदेह ही बहुत महत्त्व रखता है, लेकिन भारत में और भी दूसरे पुरुष हैं, जिनका काम भी महत्त्व रखता है। खास कर के हमारे देश के जो नेता हैं, वे बहुत बोझ उठा रहे हैं। उनका वह काम भी कम महत्त्व का नहीं है।' हमने उन्हें जवाब में लिखा कि 'जिनके साथ आपने हमारी तुलना करना पसन्द किया, उनके साथ हमारी तुलना हो नहीं हो सकती। उनके सिर पर लोगों ने बोझ रखा है, परन्तु हमारे सिर पर बोझ ही नहीं है। हम जानते हैं कि हमें कोई भी चिन्ता नहीं है। माता-पिता पर कुटुंब की जिम्मेवारी होती है। वे चिंतन भी करते हैं, चिंता भी करते हैं। उनके सिर पर भार होता है। लेकिन हमारे सिर पर कोई भार नहीं है। हम चिन्तन करते हैं और चिन्तन से जो सूझता है, वह हम लोगों के सामने रखते हैं। लोग अमल करते हैं, तो उनका भला ही है और हमारे विचार पसन्द नहीं करते हैं और अमल नहीं करते हैं, तो हमें उसकी कतई चिन्ता नहीं है। हम यह नहीं कह सकते कि लोगों ने सुना नहीं, इसलिए हमें उसकी चिन्ता है। अगर लोग हमारी बात न मानें तो वे न मानने के लिए भी आजाद हैं।

आलोचना का अधिकार

पिछले दिनों नागपुर में काँग्रेस ने एक प्रस्ताव किया है। वह यह है कि सीलिंग करके भूमिहीनों को थोड़ी-थोड़ी जमीन दी जाय और आगे चलकर धीरे-धीरे उनको सहकारी खेती के लिए प्रोत्साहित किया जाय। अब काँग्रेस के कई बड़े-बड़े लोगों ने उसकी शिकायत शुरू की है और खुल्लमखुल्ला उस पर टीकाएँ करनी प्रारंभ की हैं। तब कांग्रेस ने जाहिर किया कि कांग्रेस में रहकर जो खुल्लमखुल्ला टीकाएँ करेंगे, वे कांग्रेस में नहीं रह सकेंगे। किसी को अगर कुछ कहना-सुनना हो, तो वे खानगी तौर पर कहें, अन्यथा उन पर अनुशासन की कारवाही की जायेगी। लेकिन यह बाबा जाहिर करना चाहता है कि लोग खुले दिल से हमारे काम की टीकाएँ करें। उन पर कोई कार्यवाही नहीं की जायेगी। उनको बाबा को किसी संस्था से नहीं हटाया जायेगा। हमारा विचार पसंद करने का या नापसंद करने तथा उस पर जाहिर टीका करने का या उसे बल देने का कुल अधिकार आपको है। हम एक निर्भयता का वातावरण बनाना चाहते हैं। हम निर्भय हैं और चाहते हैं कि सभी निर्भय बनें।

[चालू]

अनुक्रम

१. ग्रामशक्ति और विश्वशक्ति के विकास से ही... पिलानी ३० मार्च '५९ पृष्ठ ३२९
२. गाँव की योजना गाँव में बनेगी, तब... पड़घरी २३ नवम्बर '५८ ,, ३३१
३. सर्व-सेवा-संघ जैसी पक्षमुक्त संस्थाएँ... चिड़ावा २९ मार्च '५९ ,, ३३३
४. हमारा आन्दोलन दुनिया में शान्ति और... चुरू २२ मार्च '५९ ,, ३३६

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी।